उच्चत्तर माध्यमिक स्तर की सी.बी.एस.ई. (वर्ष 2003) एवं यू.पी. बोर्ड की प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तकों के संदेहास्पद बिन्दुओं का अध्ययन

प्रदीप कुमार सिंह
(शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र, उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय, वाराणसी ,उत्तर प्रदेश, भारत)

Abstract

History is based on facts.Therefore history writing is a very difficult task.Particularly writing of ancient history requires more caution because its more difficult to collect and compile facts of an ancient era. History should be in consonance with the national values of a country.It should be based on scientific facts and free from prejudices.The dawn of 21st century in India began with controversy related to writing of 'Ancient India' the textbook for class XIth published by NCERT.There was a national debate on the validity and prejudices.However, the personal prejudices have no significance in any scientific study and all academic issues should be resolved on the basis of scientific methods of study. Curriculum evaluation of text-books of various boards of study can be done scientifically using scientific method of content analysis.Present study is an attempt to analyze the ancient Indian history textbook for class XI used by CBSE Board students, published by NCERT in 2003 and a popular history textbook used by U.P. Board students to study ancient Indian history in class XI.

Key-words: Ancient History Text-Books, Higher Secondary Level

पाठ्यपुस्तकों का लेखन एवं उनका समालोचन सतत् चलने वाली स्वस्थ प्रक्रिया है। इसके अभाव में अवशादों की छटाई संभव नहीं हो सकेगी और पाठ्यपुस्तकों का लेखन–पुर्नमूल्यांकन प्रभावित होगा। जहाँ तक इतिहास विशेषकर प्राचीन इतिहास की बात है तो इसके पाठ्यपुस्तकों के लेखन में विशेष सतर्कता की जरूरत होती है क्योंकि इसमें उल्लिखित घटनाएँ हजारों–लाखों वर्षों पूर्व तक की घटित हुयी रहती हैं। ऐसे में तथ्यों के साथ छेड़छाड़ की संभावना हमेशा बनी रहती है। अतः घटनाओं एवं तथ्यों की वैधता एवं विश्वसनीयता को सुनिश्चित करना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। इतिहास पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु यथासंभव संदहेमुक्त, प्रमाणित, विभिन्न साक्ष्यों द्वारा समर्थित एवं भारतीय संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्यों के अनुकूल होनी चाहिए।

इतिहास हमें अतीत में हुई भयंकर भूलों से बचना सिखाता है अर्थात् इतिहास की वे घटनाएँ जिनका अनुभव मानव जाति के लिए अच्छा नहीं रहा है, उनसे सबक लेना सिखाता है। इतिहास को हम अपने अतीत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक विकास का आईना तथा वर्तमान एवं भविष्य का मार्गदर्शक कह सकते हैं। आज मानव विकास के जिस स्तर पर है वहाँ पर एक क्रमिक विकास द्वारा पहुँचा है। इन क्रमिक विकास के विभिन्न स्तरों को इतिहास के माध्यम से देख सकते हैं। अतः इतिहास पाठ्पुस्तकों को भी आईना का कार्य करना चाहिए और अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सही रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार प्राचीन इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के संदेहास्पद बिन्दुओं का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अपने अतीत को वर्तमान एवं भविष्य से जोड़े रखने के लिए इतिहास के पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन आवश्यक है। इस क्षेत्र में अध्ययनों की संख्या पर्याप्त नहीं है। दवे एवं दवे (1991) ने पाठ्यक्रम से[1] सम्बन्धित अपने अध्ययन में पाया कि भारतीय संदर्भ में पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन विशेषतौर पर राष्ट्रीय एकता के परिप्रेक्ष्य में ही किया गया है। इन अध्ययनों की संख्या एक सर्वे रिपोर्ट से दूसरे तक क्रमशः बढ़ी है, जैसे प्रथम सर्वे–

0(0%), द्वितीय सर्वे 9(12.8%), तृतीय 9(9%), चतुर्थ 8(7.4%)। उपरोक्त प्रतिशत दर्शाते हैं कि द्वितीय सर्वे (1979) में सर्वाधिक अध्ययन हुए हैं। लेकिन चतुर्थ सर्वे (1982–88) में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हुए ग्यारह अध्ययनों में कोई भी इतिहास अथवा सामाजिक विज्ञान अध्ययन से संबंधित नहीं था।

इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न शोध गुप्ता (1953), बाघमारे (1971), खेर (1972), गगनेजा (1974), करीम (1982) एवं धनसेकरन (1985) द्वारा किये गये हैं, लेकिन इनमें से एक भी अध्ययन उच्चतर–माध्यमिक स्तर से संबंधित नहीं है। इसके अतिरिक्त इनमें से एक भी अध्ययन सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0बोर्ड की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों से संबंधित नहीं है।

वर्ष 2002–03 में जब एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा ''विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2000)'' को आधार बनाकर इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मुद्रण कराया गया तो विवाद जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी। एन0सी0ई0आर0टी0 पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाये गये (हिन्दुस्तान, 2002)। पटनायक (2002) ने इसे विवेक पर हमला कहा, थापर (2002) ने इसे प्रयोजित हिन्दूत्व की श्रेणी में रखा, पणिक्कर (2002) ने इसे भारतीय शिक्षा की दिशा को लेकर प्रश्न किया। इसी प्रकार अनेक शिक्षाविदों, इतिहास विशेषज्ञों एवं विचारकों ने इसे संदेह की दृष्टि से देखा। किसी भी प्रकार के संदेह को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है वैज्ञानिक शोध। अतः मूलतः समाधान हेतु शोधकर्ता ने इस विषय को अपने चिंतन का विषय बनाया। चूँकि सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड देश के दो सबसे प्रमुख बोर्ड हैं एवं संख्या की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। अतः ऐसी स्थिति में सी0बी0एस0ई0 एवं यू0पी0 बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर के प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तकों के संदेहास्पद बिन्दुओं का अध्ययन आवश्यक था। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत विषयवस्तु की गंभीरता एवं विशालता को देखते हुए मात्र प्राचीन इतिहास के पाठ्यपुस्तकों के संदेहास्पद बिन्दुओं का अध्ययन किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन हेतु औपचारिक रूप में निम्नलिखित समस्या कथन निर्धारित किया गया था –

''उच्चत्तर–माध्यमिक स्तर की सी0बी0एस0ई0 (वर्ष 2003) एवं यू0पी0 बोर्ड के प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तकों के संदेहास्पद बिन्दुओं का अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य

उपरोक्त समस्या कथन के सन्दर्भ में अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. सी0बी0एस0ई0 कक्षा ग्यारह हेतु एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा वर्ष 2003 में मुद्रित प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु में संदेहास्पद बिन्दुओं को चिन्हित करना।
2. यू0पी0 बोर्ड कक्षा ग्यारह के पाठ्यक्रम पर आधारित एवं वर्ष 2003–04 में प्रचलित प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तक में संदेहास्पद बिन्दुओं को चिन्हित करना।
3. सी0बी0एस0ई एवं यू0पी0 बोर्ड के अन्तर्गत कक्षा ग्यारह के प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तकों की विश्लेशित संदेहास्पद बिन्दुओं की तुलना करना।

अध्ययन की विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए गुणात्मक शोध विधि के अन्तर्गत संदेहास्पद बिन्दुओं को प्राप्त करने हेतु विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया हैं इन संदेहास्पद बिन्दुओं के चिन्हिकरण हेतु इतिहास के द्वितीयक स्रोत के रूप में विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों को सन्दर्भ रूप में लिया गया है। शोध सामग्री ऐतिहासिक होने के कारण विषयवस्तु विश्लेषण द्वारा चिन्हित संदेहास्पद बिन्दुओं को स्वनिर्मित प्रश्नावली रूप में 50 इतिहास विशेषज्ञों/विषय शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत कर प्रश्नावली की प्रारूप एवं विषयवस्तु वैधता सुनिश्चित की गयी तथा उनके विचार लिये गये। ये विचार हाँ (सहमत) तथा नहीं (असहमत) के रूप में लिये गये।

अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में निम्नलिखित प्राचीन इतिहास के पाठ्यपुस्तकों का चयन किया गया है।

1 सी0बी0एस0ई0 कक्षा ग्यारह हेतु एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा वर्ष 2003 में मुद्रित एवं मक्खन लाल द्वारा लिखित ''प्राचीन भारत'' पाठ्यपुस्तक का चयन किया गया है।

2 यू0पी0 बोर्ड के इतिहास के पाठ्यक्रम पर आधारित एवं वर्ष 2003–2004 में प्रचलित तथा श्रीनेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित ''भारत का वृहद इतिहास'' भाग–1 नामक पाठ्यपुस्तक के प्राचीन इतिहास के विषयवस्तु से संबंधित 15 अध्यायों का चयन किया गया है।

पाठ्य पुस्तकों का विषय वस्तु विश्लेशण

प्रस्तुत अध्ययन के प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एन0सी0ई0आर0टी0 कक्षा ग्यारह हेतु वर्ष 2003 मुद्रित एवं मक्खन लाल द्वारा लिखित ''प्राचीन भारत'' नामक प्राचीन इतिहास पाठ्यपुस्तक के संदेहास्पद बिन्दुओं का चिन्हीकरण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। इसके उपरान्त चिन्हित विषयवस्तु के इतिहास विशेषज्ञों/विषय शिक्षकों के समक्ष प्रश्नावली रूप में प्रस्तुत कर उनके विचार लिये गये। इसका विस्तृत विवरण सारणी–1 में दिया गया है–

सारणी संख्या–1: सी0बी0एस0ई0 कक्षा ग्यारह को ''प्राचीन भारत'', वर्ष 2003 मुद्रित एवं मक्खन लाल द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक के संदेहास्पद बिन्दु तथा इतिहास विशेषज्ञों/विषय शिक्षकों द्वारा उन पर प्रदत्त विचारों की आवृत्ति एवं प्रतिशत।

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों/शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
1.	भारतीय इतिहास का अध्ययन	पुराणों के अनुसार इतिहास के ये विषय हैः सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वंतर, वंश, वंशानुचरित।	6	50 (100)	00 (00)	संदेहास्पद
2.	प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन	साम्राज्यवादी विचारधारा की भाँति इस विचारधारा (भारतीय मार्क्सवादी) को भी भारतीय सभ्यता में कोई अच्छी चीज दिखाई नहीं देती।	16	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद
		चूँकि उन्हें (भारतीय मार्क्सवादी इतिहासकार) धर्म और आध्यात्मिकता से चिढ़ है, इसलिए साधु–संतों और ऋषि–महात्माओं के प्रति उनकी अनादर की भावना स्पष्ट दिखायी देती है।	17	42 (84)	08 (16)	संदेहास्पद
3.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	किन्तु समय बीतने के साथ–साथ अपने प्राचीन लिपियों में भारतीयों की रूचि समाप्त हो गयी और इसलिए वे अपने लिखित इतिहास के अधिकांश भाग को भूल गये। (चतुर्थ अनुच्छेद)	24	38 (76)	12 (24)	संदेहास्पद

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों / शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
4.	भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि	पुराणों में भारतवर्ष शब्द की परिभाषा इस प्रकार की गई है, "वह देश .... इसके अपने लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र (अर्थात हिन्दू) हैं।"	36	36 (72)	14 (28)	संदेहास्पद
5.	हड़प्पा संस्कृति	हड़प्पाई सभ्यता में समाज का ढाँचा अत्यन्त सुव्यवस्थित और जीवन का स्तर अवश्य ही ऊँचा रहा होगा, क्योंकि उस समय की संचार–प्रणाली अत्यन्त विकसित थी।	77	35 (70)	15 (30)	संदेहास्पद
		यह धर्म (हड़प्पा सभ्यता) मुख्य रूप से यहीं देश में पनपा, बढ़ा था और यह "हिन्दू धर्म का ही एक पूर्व–प्रजनक है।"	82	35 (70)	15 (30)	संदेहास्पद
6.	वैदिक सभ्यता	वैसे तो प्रत्येक सूक्त एवं मंत्र का कोई न कोई ऋषि होता है, जो उस मंत्र का द्रष्टा होता है, लेकिन हिन्दूओं ने सदा उनके दिव्य उदगम् पर बल दिया है।	89	38 (76)	12 (24)	संदेहास्पद
		मैक्समूलर ने .... यह निष्कर्ष निकाला कि ऋग्वेद की रचना 1200–1000 ई0पू0 के आस–पास हुई होगी। जब डब्ल्यू0डी0 ह्विटनी जैसे उनके समकालीन विद्वानों ने काल निर्धारण के उसके मनमाने .... निष्कर्ष पर अंगुली उठाई तो मैक्समूलर ने स्वीकार किया कि वह तो ऐसे ही अटकलबाजी कर रहा था।	89, 90	30 (60)	20 (40)	संदेहास्पद
7.	जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का विकास	"ईसा पूर्व छठी शताब्दी के समय को भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल–बिन्दु माना जा सकता है। अब वेदों की कर्मकांडीय परम्परा का अधिक बोलबाला नहीं रहा था। उपनिषदों ने जीवन की आधारभूत समस्या के बारे में चिंतन करने की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी थी। इससे नए विचारों तथा दार्शनिक सिद्धान्तों का एक ऐसा अभिप्रेरक वातावरण बन गया था, जिसके फलस्वरूप अनेक धार्मिक पंथों एवं सम्प्रदायों की स्थापना हुई।" (पृष्ठ–117, प्रथम अनुच्छेद)	117	35 (70)	15 (30)	संदेहास्पद

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों / शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
		पृष्ठ–117 के ही द्वितीय अनुच्छेद में कहा गया है कि "यहाँ बता दें कि जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही पहले से विद्यमान प्रणाली के कतिपय पक्षों पर आधारित हैं। दोनों ही यति व्यवस्था और भ्रातृ भाव की बुनियाद पर खड़े हैं। वस्तुतः यतित्वाद (Asceticism) का मूल वेदों में ही खोजा जा सकता है और उसे उपनिषदों से प्रत्यक्ष प्रोत्साहन मिला है।"	117	25 (50)	25 (50)	संदेहास्पद नही
		पृष्ठ–118 के पंचम अनुच्छेद में कहा गया है कि "**यद्यपि जैनों ने ईश्वर के** अस्तित्व को अस्वीकार **नहीं किया, सामान्यतया उन्होंने उसकी** अवहेलना **या उपेक्षा की।**	118	45 (90)	05 (10)	संदेहास्पद
8.	मौर्य काल	**पृष्ठ 145 के चतुर्थ अनुच्छेद** में उल्लेख है कि "चातुर्वर्ण व्यवस्था तब भी समाज में प्रचलित थी, लेकिन शिल्पियों को चाहे वह किसी भी जाति के हों, समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त था। भौतिक उन्नति ने जाति संबंधी प्रतिबंधों को कम कर दिया था..........।"	145	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद
		"अनेक ऐसे संदर्भ हैं जिनसे पता चलता है कि स्त्रियों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी और वे लाभपूर्ण व्यवसायों में संलग्न थी।" (पृष्ठ– 145)	145	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद
9.	शुंग और सातवाहन काल	"मौर्यों के बाद शुंग वंश शासन में आया और शुंगों ने 187 ई0पू0 से 75 ई0पू0 यानी 112 वर्षों तक राज किया।"	152	35 (70)	15 (30)	संदेहास्पद
		गौतमी पुत्र शातकर्णि की उपलब्धियों को राजमाता गौतमी बलश्री के नासिक शिलालेख में महिमामंडित करके प्रस्तुत किया गया है। ....इस शिलालेख में पुलुमावि द्वितीय को शकों, यवनों और पहलवों का विनाश करने वाला बताया गया है। उसने नहपान को उखाड़ फेंका और बड़ी संख्या में उसके चाँदी के सिक्के पुनरांकित करवाए। (पृष्ठ 154, 155)	154, 155	50 (100)	00 (00)	संदेहास्पद

अध्याय	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों / शिक्षकों के विचार		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
		"उसके (कनिष्क) शासन काल में तक्षशिला एवं मथुरा कला तथा संस्कृति के महान केन्द्र बन गए।" (पृष्ठ 158, पंचम अनुच्छेद)	158	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद
10.	दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास	"चेरों को केरलपुत्र भी कहा जाता है। इनका राज्य पाड्यों के राज्य के पश्चिम और उत्तर में स्थित था। इस राज्य के क्षेत्र में समुद्र और कोंकण पर्वतमाला के बीच की संकरी पट्टी शामिल थी।"	165, 166	50 (100)	00 (20)	संदेहास्पद
11.	शुंग और सातवाहन शासन काल में समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति	पृष्ठ 171 के अन्तिम अनुच्छेद में उल्लेख है कि "नारियों को न केवल अच्छी शिक्षा प्राप्त होती थी, बल्कि समाज और परिवार में उनको सम्मान जनक स्थान प्राप्त था।" (लगभग दूसरी शदी ई0पू0 से दूसरी–तीसरी शदी ई0 तक)	171	37 (74)	13 (26)	संदेहास्पद
		.... सुश्रुत कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन थे।"	181	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद
12.	गुप्त वंश से हर्ष तक का भारत	"समुद्रगुप्त ने 340 ई0 के आस–पास अपने पिता के बाद राजकाज संभाला"	186	50 (100)	00 (00)	संदेहास्पद
		"समुद्रगुप्त का देहांत लगभग 380 ई0 में हुआ ....।"	188	50 (100)	00 (00)	संदेहास्पद
14.	गुप्त से हर्ष काल तक भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दशा	पृष्ठ 200 के तृतीय अनुच्छेद में उल्लेख है कि "पहले की तरह राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए कई प्रांतों में विभाजित किया जाता था, जिन्हें उत्तर में मुक्ति और दक्षिण में मण्डल अथवा मंडलम् कहा जाता था। तदनंतर प्रांतों का उप–विभाजन उत्तर में विषय अथवा भोग और दक्षिण में कोट्टम अथवा वलनाडु के रूप में किया जाता था। प्रशासन की अन्य इकाईया	200	40 (80)	10 (20)	संदेहास्पद

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों / शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
		अवरोही क्रम में इस प्रकार थीः जिले अधिष्ठान, अथवा पट्टन उत्तर में और नाडु दक्षिण में, ग्राम समूह अर्थात् आधुनिक तहसील, जिन्हें उत्तर में वीथि और दक्षिण में पट्टल अैर कुर्रम कहा जाता था। गाँव सबसे नीचे की प्रशासनिक इकाई था।"				
		"साँची का छोटा, किन्तु सुन्दर मंदिर संख्या 17, तिगवा का कंकाली मंदिर और मध्य प्रदेश में एरण और नचना–कुठारा स्थित विष्णु और वराह मंदिर प्रारंभिक मंदिर स्थापत्य के बढ़िया उदाहरण हैं।"				

नोट– कोष्ठक में प्रतिशत आवृत्ति दी गई है।

द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यू0 पी0 बोर्ड कक्षा ग्यारह हेतु श्री नेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित एवं वर्ष 2003–2004 में प्रचलित प्राचीन भारतीय इतिहास पाठ्यपुस्तक के संदेहास्पद बिन्दुओं के चिन्हिकरण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। इसके उपरान्त चिन्हित विषयवस्तु को इतिहास विशेषज्ञों / विषय शिक्षकों के समक्ष प्रश्नावली रूप में प्रस्तुत कर उनके विचार लिये गये। इसका विस्तृत वर्णन सारणी–2 में दिया गया है।

सारणी संख्या–2 : यू0 पी0 बोर्ड के कक्षा ग्यारह के प्राचीन इतिहास के पाठ्यक्रम पर आधारित एवं वर्ष 2003–04 में प्रचलित तथा श्रीनेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित पाठ्यपुस्तक के संदेहास्पद बिन्दु और इतिहास विशेषज्ञों / विषय शिक्षकों द्वारा उन पर प्रदत्त विचारों की आवृत्ति एवं प्रतिशत।

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों / शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
1.	भारत की मौलिक एकता	"हमारे देश की आर्थिक एकता इस बात में पायी जाती है कि सम्पूर्ण प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान रहा है और रहेगा" (पंचम अनुच्छेद)	7	40(80)	10(20)	संदेहास्पद
		"हिन्दू धर्म आस्तिक तथा नास्तिक दो उपखण्डों में विभक्त है। आस्तिक के अन्तर्गत वैष्णव, शैव, शाक्त, भागवत आदि आते हैं और नास्तिक के अन्तर्गत बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि आते हैं।" (द्वितीय अनुच्छेद)	8	30(60)	20(40)	संदेहास्पद

अध्याय	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों/शिक्षकों के विचार		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
		"मुगल काल में सम्राट अशोक ने इबादत खाना कि स्थापना कर विभिन्न धर्मो में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया था।" (चतुर्थ अनुच्छेद)	10	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
2.	प्राचीन भारत के इतिहास जानने के साधन	वेद, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य आदि को प्राचीन भारत के इतिहास जानने के अनैतिहासिक साधन तथा महाकाव्यों, पुराणों, एवं अर्थशास्त्र को ऐतिहासिक साधन माना गया है।	14–17	34(68)	16(22)	संदेहास्पद
		"भारत की अत्यन्त प्राचीन पंच–मार्क मुद्राओं से तत्कालीन प्रजातन्त्र शासन प्रणाली का परिचय प्राप्त होता है।"	23	40(80)	10(20)	संदेहास्पद
3.	सिन्धु घाटी की सभ्यता	"राय बहादुर दयाराम साहनी ने उत्खनन के कार्य करवाकर 1922 ई0 में इस नगर (हड़प्पा) का पता लगाया था"	27	36(72)	14(28)	संदेहास्पद
4.	आर्यो का परिचय	"वैदिक ग्रन्थ उन ग्रन्थों को कहते हैं जिनकी रचना भारतीय आर्यो ने भारतवर्ष में ईसा से 2500 वर्ष पूर्व से 500 वर्ष पूर्व तक में की थी।"	53	40(80)	10(20)	संदेहास्पद
		"आरण्यक तथा उपनिषद भी ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तर्गत आते हैं।"	56	30(60)	20(40)	संदेहास्पद
		सूत्रों की रचना करने वालों में पाणिनी आदि हैं। इनकी रचना 700 ई0पू0 से 200 ई0 तक में हुई थी।"	57	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
5.	वैदिक काल की सभ्यता	" ....इस सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की रचना सहस्रों वर्ष पूर्व से 200 वर्ष पूर्व के मध्य में की गयी थी। अतएव इस काल को वैदिक काल के नाम से पुकारा जाता है।	60	41(82)	09(18)	संदेहास्पद
		"............ नियमानुसार स्त्रियाँ (ऋग्वैदिक काल) स्वतन्त्र नहीं होती थी और उन्हें अपने पुरूष संबन्धियों के संरक्षण तथा नियंत्रण में रहना पड़ता था। विवाह के पूर्व कन्याओं को अपने पिता के,	63	40(80)	10(20)	संदेहास्पद

अध्याय	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों/शिक्षकों के विचार		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
		पिता के न रहने पर वह अपने भाई के, विवाह हो जाने पर वह अपने पति को और विधवा हो जाने पर अपने पुत्र के संरक्षण में रहती थी। इस प्रकार स्त्री को सदैव किसी न किसी पुरुष के संरक्षण में रहना पड़ता था।''				
		''चावल, जौ, घी, दूध ऋग्वैदिक आर्यो का मुख्य भोजन था।''	63	35(70)	10(30)	संदेहास्पद
		''प्रारम्भ में व्यापार (ऋग्वैदिक काल) वस्तु–विनिमय द्वारा होता था। बाद में गाय द्वारा मूल्य आँका जाने लगा। कालान्तर में सोने–चाँदी का और अन्त में निष्क नामक सोने की मुद्रा का प्रयोग होने लगा।''	65	15(30)	35(70)	संदेहास्पदनहीं
		''............अतएव छूत–छात की भावना उत्पन्न होने लगी अब (उत्तर वैदिक काल) उच्च–वर्ण वाले शूद्रों के साथ खान–पान नहीं करते थे और उन्हें अस्पृष्य समझने लगे।''	70	25(50)	25(50)	संदेहास्पद नहीं
6.	धार्मिक क्रान्ति का युग	''राजपूतों के उत्कर्ष से बौद्ध धर्म को बहुत बड़ा आघात लगा। राजपूतों की हिंसावृत्ति तथा युद्ध–प्रियता ने अहिंसा धर्म को स्वीकार नहीं किया।''	109	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
		''ऐसा प्रतीत होता है कि मूर्ति–पूजा की प्रथा भारत के बौद्धों द्वारा ही आरम्भ की गई। क्योंकि बौद्ध धर्म के पूर्व मूर्ति पूजा का चिन्ह् हिन्दुओं में उपलब्ध नहीं है।''	116	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
		''वैष्णव धर्म की गणना आस्तिक धर्मों में होती है। यह सम्प्रदाय भी उसी प्रतिक्रिया का परिणाम था जो ब्राह्मण धर्म के विरूद्ध आरम्भ हुई थी।''	118	40(80)	10(20)	संदेहास्पद
7.	मौर्य–साम्राज्य (राजनीतिक एकता की प्रक्रिया)	305 ई0पू0 में सेल्यूकस–चन्द्रगुप्त मौर्य संधि के परिणामस्वरूप ''वर्तमान अफगानिस्तान तथा बिलोचिस्तान का सम्पूर्ण प्रदेश जो खैबर दर्रे से हिन्दूकुश पर्वत तक फैला था, सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को दे दिया।''	141	35(70)	15(30)	संदेहास्पद

अध्याय संख्या	पाठ का नाम	संदेहास्पद विषयवस्तु	पृ0सं0	विशेषज्ञों/शिक्षकों के विचार की आवृत्ति एवं प्रतिशत		
				हाँ	नहीं	टिप्पणी
8.	गुप्त साम्राज्य	"कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम ने एक सम्वत् चलाया था जिसका आरम्भ 25 फरवरी, 330 ई0 अर्थात् चन्द्रगुप्त के राज्याभिषेक से माना जाता है।"	190	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
9.	गुप्तकालीन राज्य–संस्था तथा संस्कृति	"चरक तथा सुश्रुत इस काल (गुप्त काल) के प्रसिद्ध वैद्य थे।"	215	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
10.	हर्ष का इतिहास	"राज्यवर्द्धन (थानेश्वर का पुश्यभूति शासक) के बाद उसका पुत्र आदित्यवर्द्धन राजा हुआ। उसने गुप्त राजकुमारी महासेन गुप्त से विवाह कर अपनी विदेश नीति को दृढ़ कर लिया था।"	219	50(100)	00(00)	संदेहास्पद
11.	दक्षिणापथ के राज्य	"कल्हण के विक्रमांकदेवचरित के अनुसार चालुक्य .... था।"	253	50(100)	00(00)	संदेहास्पद

नोट– कोष्ठक में प्रतिशत आवृत्ति दी गई है।

निष्कर्ष

सारणी संख्या–1 एवं 2 के आधार पर अध्ययन के तीनों उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गये–

प्रथम उद्देश्य से संबंधित निष्कर्ष : सारणी संख्या–1 द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि एन0सी0ई0आर0टी0 कक्षा ग्यारह की वर्ष 2003 मुद्रित एवं मक्खन लाल द्वारा लिखित "प्राचीन इतिहास" पाठ्यपुस्तक के 23 अध्यायों में से मात्र 12 अध्यायों से 23 संदेहास्पद बिन्दु प्राप्त हुए हैं। इन 23 संदेहास्पद विन्दुओं में से अध्याय 12 के द्वितीय बिन्दु को विषेशज्ञों की राय के आधार पर संदेहास्पद नहीं माना गया है।

द्वितीय उद्देश्य से संबंधित निष्कर्ष : सारणी संख्या–2 द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यू0पी0 बोर्ड के इतिहास पाठ्यक्रम पर आधारित तथा श्रीनेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित एवं वर्ष 2003–2004 में प्रचलित "भारत का बृहद इतिहास" भाग–1 पाठ्यपुस्तक के प्राचीन इतिहास से संबंधित 15 अध्यायों में से मात्र 11 अध्यायों से 22 संदेहास्पद बिन्दु प्राप्त हुए हैं। इन संदेहास्पद बिन्दुओं में से अध्याय 5 के चतुर्थ एवं पंचम बिन्दुओं को विषेशज्ञों की राय के आधार पर संदेहास्पद नहीं माना गया है।

तृतीय उद्देश्य से संबंधित निष्कर्ष : सारणी संख्या–1 एवं 2 के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सी0बी0एस0ई0 कक्षा ग्यारह की वर्ष 2003 मुद्रित "प्राचीन भारत" पाठ्यपुस्तक, यू0पी0 बोर्ड के पाठ्यक्रम पर आधारित तथा श्रीनेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित एवं वर्ष 2003–04 में प्रचलित, भारत का बृहद इतिहास–भाग–1 पाठ्यपुस्तक से संदेहास्पद बिन्दुओं की प्राप्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ है। लेकिन दोनों ही पाठ्यपुस्तकों में संदेहास्पद बिन्दुओं की अधिकता है।

उपसंहार

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सी0बी0एस0ई0 की एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा वर्ष 2003 में मुद्रित एवं मक्खन लाल द्वारा लिखित "प्राचीन भारत" पाठ्यपुस्तक, यू0पी0 बोर्ड के इतिहास पाठ्यक्रम पर आधारित एवं वर्ष 2003–04 में प्रचलित तथा श्रीनेत्र पाण्डेय द्वारा लिखित "भारत का बृहद् इतिहास" भाग–1 पाठ्यपुस्तकों से संदेहास्पद विषयवस्तु की प्राप्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ है। लेकिन दोनों ही पाठ्यपुस्तकों में संदेहास्पद बिन्दुओं की अधिकता है। विषयवस्तु को जबरजस्ती थोपा नहीं जाना चाहिए। विषयवस्तु में उन्हीं नये तथ्यों को जोड़ा जाना चाहिए जो तर्किकता के साथ साक्ष्यात्मक ढंग से विषयवस्तु में सम्मिलित किये जा सकें और देश के संवैधानिक ढाँचे एवं समाज के आवश्यकताओं के अनुकूल हों। अतः दोनों ही पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु में सुधार की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. बेस्ट, जे0डब्ल्यू0 एण्ड कान, जे0वी0(1995) **रिसर्च इन एजुकेशन**, प्रेन्टिस हाल आफ इंडिया प्रा0लि0, न्यू देलही।
2. दवे, पी0एन0 एवं दवे, जे0पी0 (1991) "रिसर्च इन करीकुलम : अ ट्रेन्ड रिपार्ट, बुच एम0बी0 (इडि0), **फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन** (1983–88), वाल्यूम–I , एन0सी0ई0आर0टी0, न्यू देलही; पेज 575
3. **हिन्दुस्तान (2002)** "नई पाठ्यपुस्तको पर विवाद," हिन्दी दैनिक, 4 फरवरी, वाराणसी।
4. **विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा** (2000): एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली।
5. लाल, मक्खन (2003) **"प्राचीन भारत"** एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
6. पाण्डेय, श्रीनेत्र (2003) **"भारत का बृहद इतिहास"**, भाग–1, स्टूडेन्ट–फ्रेन्डस, इलाहाबाद।

◆